NEHRU
BAL PUSTAKALAYA

जंगल में धारियां

गीतिका जैन

अनुवाद

जया पांडे

चित्रांकन

शुद्धसत्त्व बसु

बाघों की आबादी वाले क्षेत्र

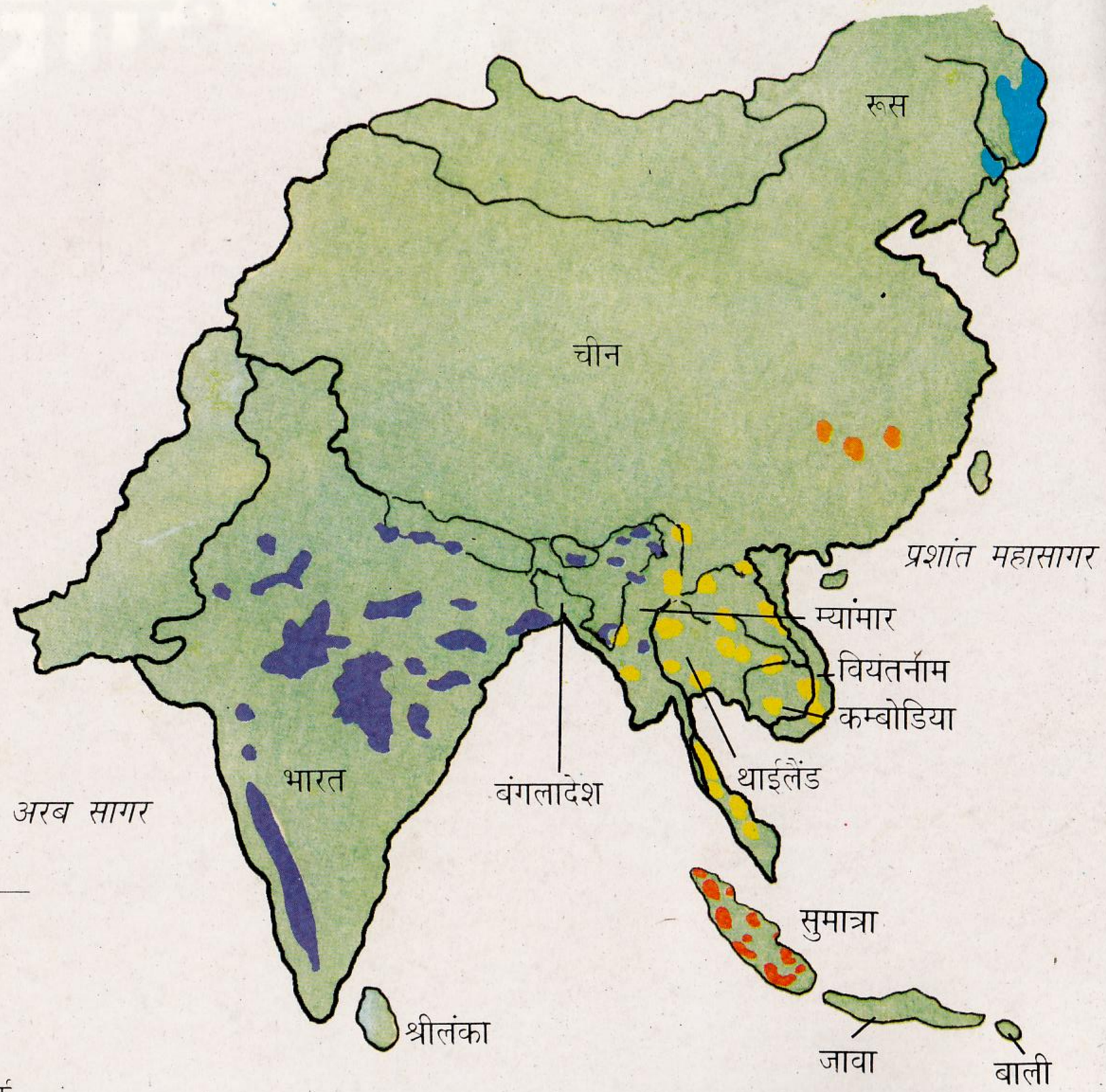

ISBN 81-237-3493-X

प्रथम संस्करण : 2001 *(शक 1922)*
मूल © गीतिका जैन, 2000
हिंदी अनुवाद © नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
रु. 13.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5 ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली-110016 द्वारा प्रकाशित

नेहरू बाल पुस्तकालय

जंगल में धारियां

गीतिका जैन

अनुवाद
जया पांडे

चित्रांकन
शुद्धसत्त्व बसु

एकः सूते सकलम्

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

बीर और स्वर्णजीत राणा तथा अंबुज और शशी जैन
को समर्पित

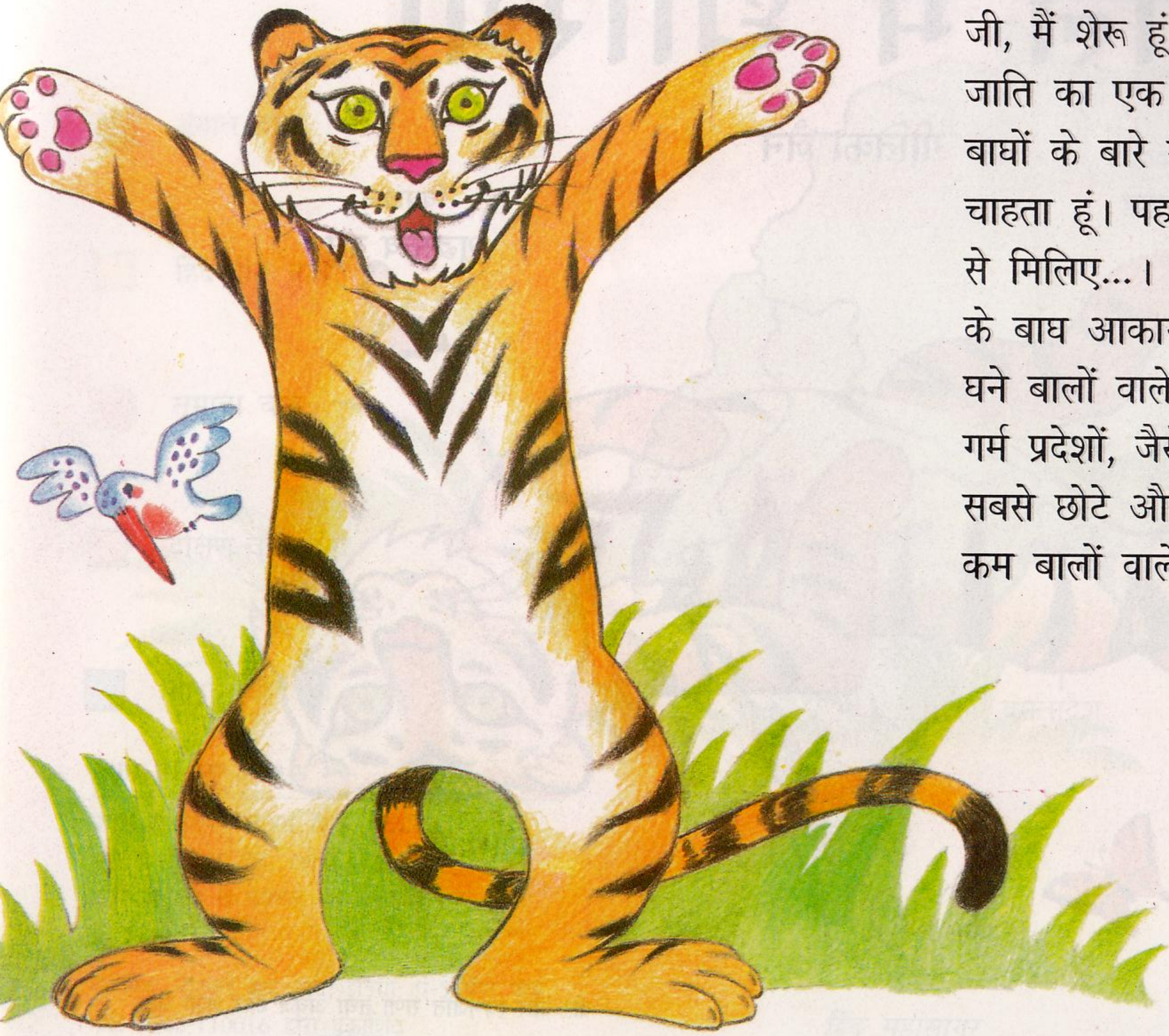

जी, मैं शेरू हूं। भारत की बंगाल
जाति का एक बाघ। मैं आपको
बाघों के बारे में कुछ बातें बताना
चाहता हूं। पहले आप मेरे चचेरे भाइयों
से मिलिए...। ठंडे प्रदेशों, जैसे साइबेरिया,
के बाघ आकार में सबसे बड़े और सबसे
घने बालों वाले होते हैं।
गर्म प्रदेशों, जैसे सुमात्रा, के बाघ
सबसे छोटे और सबसे
कम बालों वाले होते हैं।

साइबेरिया से
'यूरी'

भारत से
'माया'

सुमात्रा से
'ऊपिक'

हिंद-चीन से
'ली'

दक्षिण-चीन से
'चांग'

बाघ और भी किस्म के थे, पर अब नहीं रहे।
वे जावा, बाली और कैस्पियन में रहा करते थे।

क्या जगह है! .....

हम बाघ वहां रहना पसंद करते हैं जहां छिपने के सुरक्षित स्थान, पानी, पेट भरने के लिए जानवर और खूब खुली जगह हो।

जन्म के समय हम केवल दो या तीन बच्चे होते हैं। खेल-खेल में हम छिपना, पीछा करना और झपटना सीख जाते हैं।

लगभग डेढ़-दो साल के हो जाने पर हम अपनी मां से अलग होने लायक हो जाते हैं।

हम अकेले रहना पसंद करते हैं, शेरों की तरह झुंड में नहीं।

इलाका चुनने के बाद, झाड़ियों पर अपने शरीर की गंध छिड़ककर, पेड़ों को पंजों से खुरचकर और दहाड़ से हम अपने इलाके की अलग पहचान बनाते हैं।

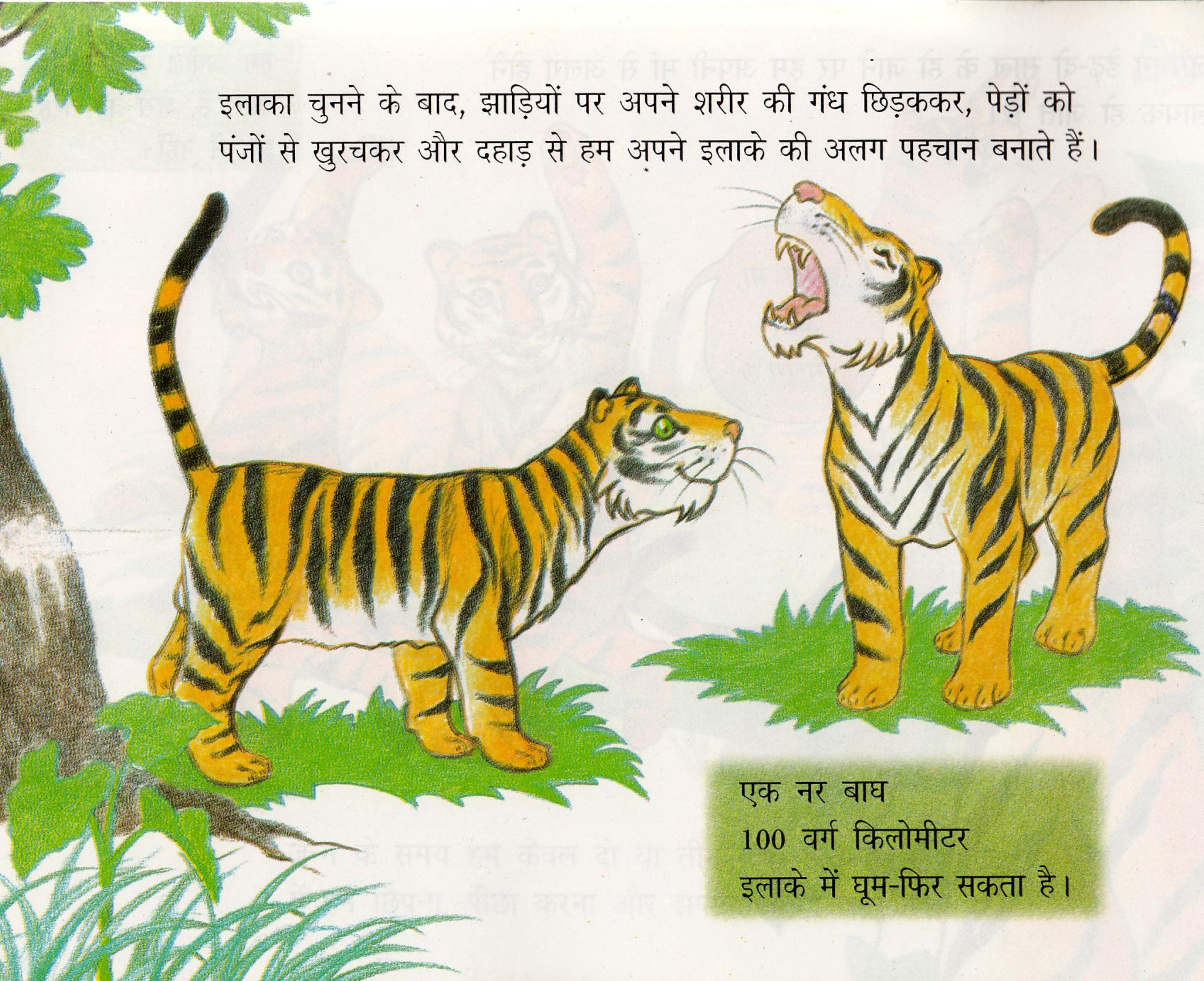

एक नर बाघ
100 वर्ग किलोमीटर
इलाके में घूम-फिर सकता है।

शिकार करना आसान नहीं। हम प्रायः चूक जाते हैं क्योंकि अंतिम क्षण में पेड़ों पर बैठे नटखट बंदर, या चौकन्ने हिरन हमें देख लेते हैं। खतरे की एक चेतावनी से जानवर भाग खड़े होते हैं। हारकर हमें दूसरी जगह शिकार खोजना पड़ता है।

हम दबे पांव अपने शिकार का पीछा करते हैं और बहुत पास पहुंचने पर तेजी से दौड़कर उस पर झपटते हैं। अपने रंग और धारियों के कारण हम जंगल की सूखी घास में घुल-मिल जाते हैं।

थोड़ी-सी कुशलता और धैर्य से हम शिकार करने में सफल हो जाते हैं।

भोजन, स्वादिष्ट भोजन ! हम खाने में हिरन, जंगली सुअर और मोर पसंद करते हैं। केकड़े, कछुए और मछली हमारा नाश्ता हैं।

हम पेड़ों पर अच्छी तरह नहीं चढ़ पाते क्योंकि हमारा वजन बहुत ज्यादा हो जाता है।

लेकिन हमें पानी पसंद है और
हम कुशलता से तैर लेते हैं।

क्या आप जानते हैं कि बाघ 'जंगल के रक्षक' कहलाते हैं ? हम पेड़-पौधे खाने वाले पशुओं का शिकार करके उनकी संख्या को सीमित रखते हैं। इससे जंगल की वनस्पति खाने वाले जानवरों की संख्या भी सीमित रहती है।

एक हरा-भरा जंगल स्पंज का काम करता है। वह बारिश का जरूरत से ज्यादा पानी सोख लेता है। जरूरत पड़ने पर उसे धीरे-धीरे छोड़ता है। इससे जीव-जगत और वनस्पति का संतुलन बना रहता है।

हमारी संख्या बढ़ने से लोगों को खुश होना चाहिए...

...लेकिन वे तो जंगल के पेड़ों को काट रहे हैं। हमारे रहने की जगह कम होती जा रही है।

बाघों की हड्डियों से बनने वाली दवा और हमारी सुंदर ख़ाल के लिए, लोग चोरी-छिपे हमें गोली से मार रहे हैं। हमें धोखे से पकड़ जहर दे रहे हैं।

क्या आप जानते हैं कि कितने बाघ मारे जा रहे हैं ?
—हर रोज एक !

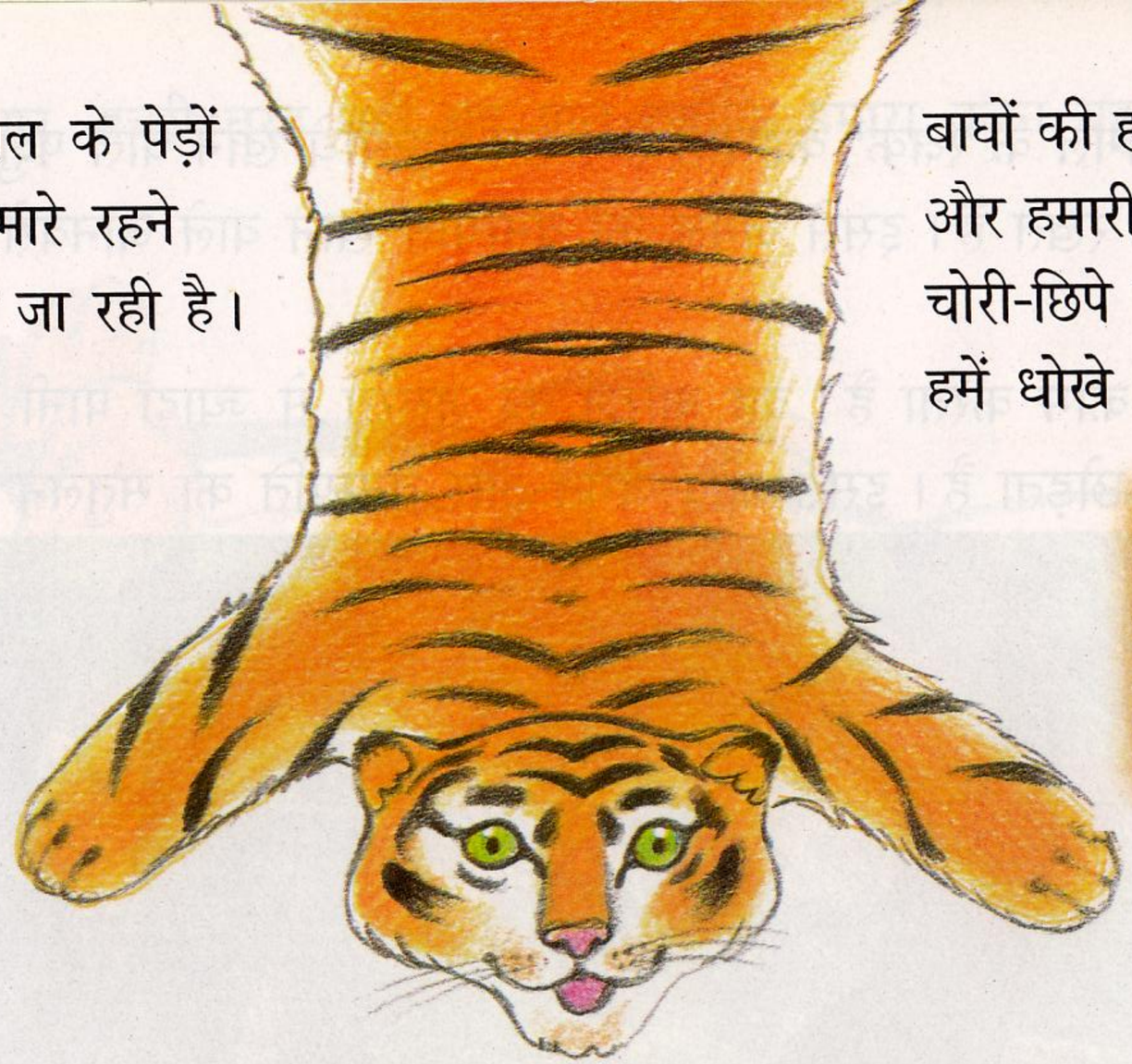

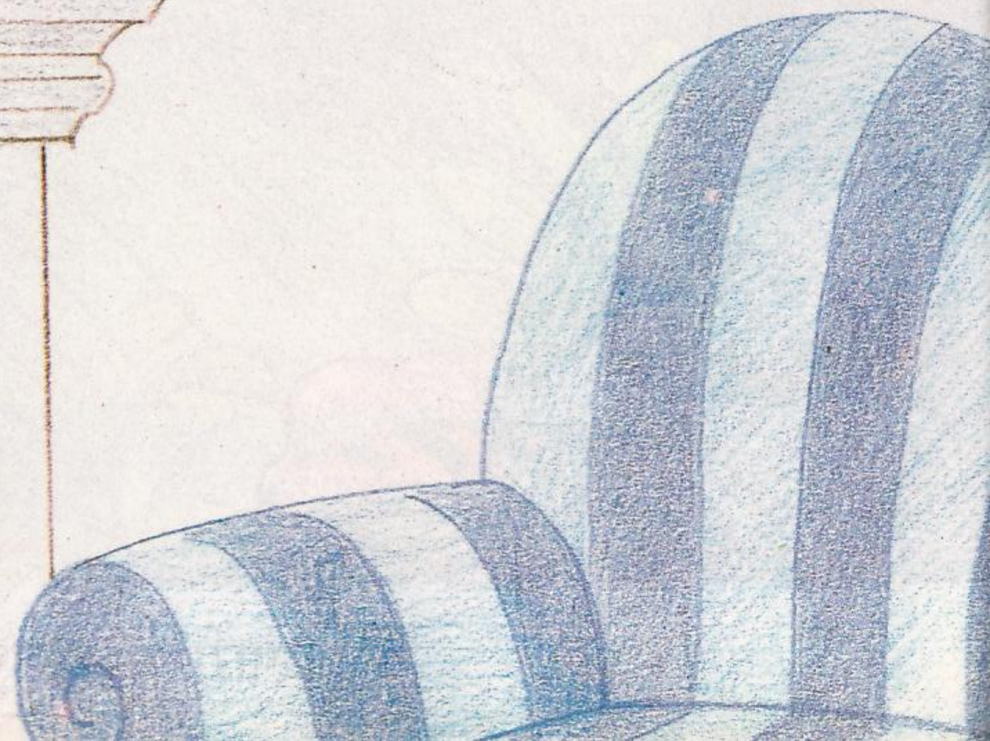

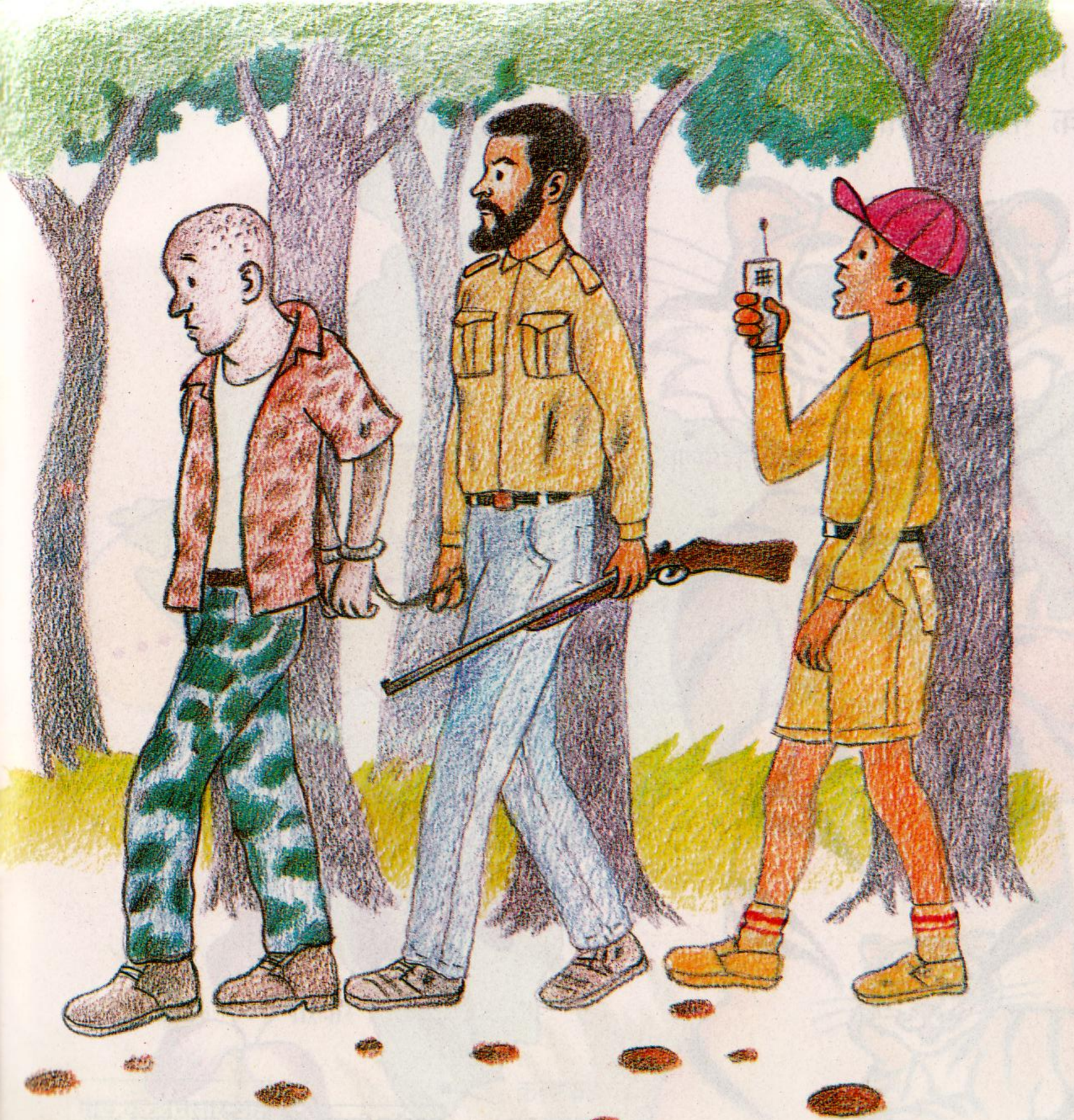

वन रक्षकों,
पहरेदारों और वन्य-जीवों
को प्यार करने वाले
आप जैसे
लोगों की वजह से ही
हम अब भी
जीवित हैं।

मुझे पता है कि आप मुझे प्यार करते हैं और मुझे खोज रहे हैं। तो उठाइए, बंदूक नहीं, अपना कैमरा—मेरी तस्वीर खींचने के लिए !

कम्प्यूटैक सिस्टम, नयी दिल्ली द्वारा कम्पोज होकर
इम्प्रैस ऑफसेट, नोएडा द्वारा मुद्रित

कार्बेट
सरिस्का
दुधवा
रणथम्भौर
वाल्मीकि
पन्ना
पलामू
मेलघाट
बांधवगढ़
पेंच
कान्हा
तदोबा
इंद्रावती
नागार्जुन सागर
बांदीपुर
पेरियार
कलाकड मुंदनथुराय
बुक्सा
मानस
नाम्दफा
दम्फा
सुंदरवन
सिमलीपाल

माप के अनुसार नहीं

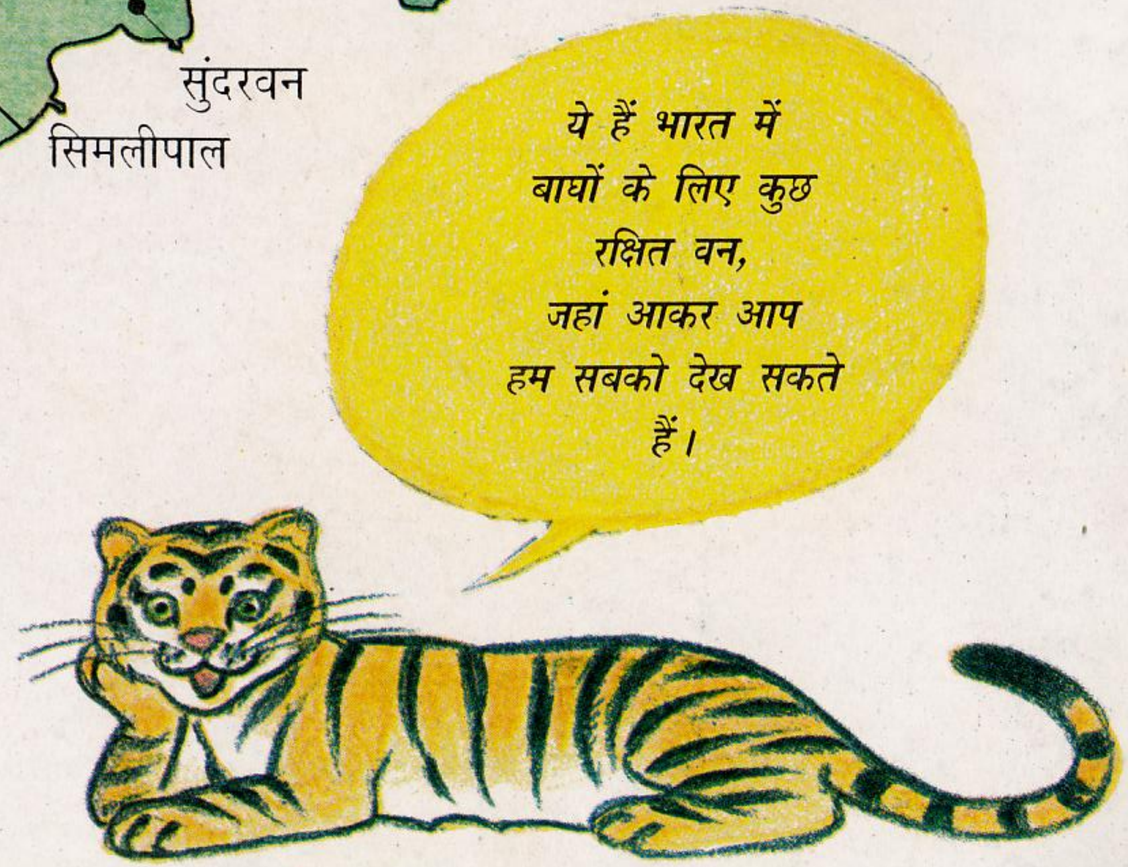

रु. 13.00 ISBN 81-237-3493-X

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया